बहरूपिया कलाकारों को चिन्हित करना व बहुरूप में रूपांतरित होने की तकनीक एवं प्रकिया पर कार्यशाला का आयोजन एवं डाक्यूमेंटेशन ।

(ब्लूप्रिंट)

बहुरुपिया यह शब्द बहु + रुप से बना है। अर्थात बहुत सारे रूप। एक ही व्यक्ति भिन्न भिन्न रूपों को धारण कर दर्शको का मनोरंजन करता है उसे बहुरुपिया कहा जाता है । यह एक प्रकार का लोक नाटक विधा है। एक ही कलाकार अलग अलग अवसर पर अलग अलग रूप (पात्र) धारण करता है। और प्रत्येक बार वह भिन्न होता है । यह उस अभिनेता का अभिनय कौशल है की दर्शक उसे देख उस कलाकार को पहचान नहीं पाता है । वह अभिनेता उस रूप में दर्शकों के साथ स्फूर्त- नाट्य का प्रदर्शन कर दर्शकों का मनोरंजन करता है। दर्शक भी इसकी प्रस्तुति का हिस्सा होते है इस मनोरंजन के बदले में दर्शक उस कलाकर को उपहार स्वरूप कुछ रूपया देते है। आज इस विधा के कलाकार लुप्तप्राय हो गए है जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है ।

एक समय था जब बहुरूपिये हम बच्चों की भी उत्सुकता का केंद्रबिंदु होते थे। हम कभी खुश होते तो कभी घबराते इनके पास जाकर इन्हें छूकर देखते थे ।...विद्वानों कि राय है कि बहुरुपिया मुग़ल दरबार का विशेष आकर्षण होते थे।..मध्यकाल में बहुरुपिया एक व्यवसाय बन गया था । कुछ साल पहले तक ये काफी प्रचलित था..होली,दशहरा आदि अवसर पर ये विभिन्न स्वांग भरकर लोगों का मनोरंजन करते थे ...घर-घर, दरवाज़े-दरवाज़े जाते ...घर का आँगन, चौपाल, नुक्कड़, दरवाज़ उनका मंच होता...इनका अभिनय और प्रदर्शन एक स्थान पर रुक कर देर तक नहीं होता बल्कि इनकी यात्रा जारी रहती , साथ-साथ अभिनय और प्रदर्शन भी चलता रहता .बहुरूपिये कभी लैला-मजनू तो कभी सन्यासी, पागल, शैतान, भगवान शंकर, डाकू, नारद और मुनीम जैसे तमाम किरदारो को निभाते .... ये इन्हें इस कदर पेश करते हैं कि एक बारगी लोग उन्हे वास्तविक समझ बैठते थे.... कई ऐसे बहुरूपिये भी रहे जो अपनी कलाकारी में इतने तल्लीन हो गए कि अपना मूल रूप, पहचान ही भूल गए....कृत्रिम रूप ही वास्तविक बन गया... । **पर आज दो जून की रोटी भी इन्हें दूभर है. दूसरों के होठो पर मुस्कुराहटें लानेवाले बहुरूपियों की जिंदगी तल्ख़ है.... । वर्तमान दौर में मनोरंजन के इतने स्रोत मौजूद है कि मात्र इस कला से पेट पालन नामुमकिन सा हो गया है .... आज ये कलाकार उपहास के पात्र बन चुके है .... बहुरूपिये बच्चों में बहुत लोकप्रिय होते थे, किन्तु आज के बच्चे बहुरुपिया के बारे में जानते तक नहीं ..लोगो का नजरिया भी इसके प्रति बदल चूका है** ।..संरक्षण नहीं मिलने से ये

भी अन्य परम्पराओं की तरह लुप्तप्राय हो रहा है.....पुश्तैनी धंधा वाले परिवारों में बच्चे इसे अपनाने में शर्म महसूस करते है...आज बहुरूपिये कभी-कभी ही किसी किसी गाँव में दीखते है ।

उद्धेश्य-

इस लुप्त प्राय हो चुकी कला विधा के वर्तमान को कलाकार चिन्हित कर इस कला को पुनःजीवित करने के प्रयास में एक पहल करना, इन कलाकारों को संगृहीत कर इनके प्रदर्शनों के द्वारा नई पीढ़ी के लोगों तक इस कला रूप को पहुचने का प्रयास मात्र।

योजना प्रारूप

इस योजना का महत्वपूर्ण चरण ज्यादा से ज्यादा कलाकारों की खोज करना है। पहले चरण **राजस्थान एवं राजस्थान से सटे गुजरात** के क्षेत्र में इन कलाकारों को चिन्हित कर उनको व्यक्तिगत मिलकर सम्पूर्ण बायोडेटा तैयार किया जाएगा ।

निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाएगा ।

*कहा रहता है ।

*इस कला से कब से जडा है ।

*इस कला के अतिरिक्त क्या कोई कार्य करता है।

*कार्य क्षेत्र कहा है ।

*इस कार्य की कठिनाई क्या है ।

*कौन कौन से रूप प्रदर्शित करता है आदि।

इन कलाकारों में से सबसे ज्यादा अनुभवी विशिष्ट कलाकारों को चुनकर एक कार्य शाला का आयोजन कर उनके अभिनय एवं तकनीक पर विशेष चर्चा, व विभिन्न रूपों में रूपांतरण की प्रक्रिया का प्रदर्शन व वीडियो डोक्युमेन्टेशन किया जाएगा ।

कार्य क्षेत्र -

क्योंकि राजस्थान में रियासतकाल में बहुरुपिया कलाकारों के परिवार को संरक्षण दिया जाता था। ऐसे कई परिवार है जिन्हें रहने व खाने के लिए जमींन देकर अपनी रियासत में बसाया गया । इस विधा के कलाकारों की खोज खासकर दक्षिणी राजस्थान उदयपुर संभाग, जयपुर संभाग एवं दक्षिणी राजस्थान के सीमावर्ती गुजरात के जिलों दाहोद, अहमदाबाद, हिम्मतनगर क्षेत्र में की खोज की जाएगी।

समय

यह सम्पूर्ण कार्य एक वर्ष की अवधि में किया जाएगा । इस कार्य में सबसे ज्यादा समय इन कलाकरों को खोजने में और इन तक पहुचने में लगेगा । इसके लिए एक टीम बनाकर कार्य करने की आवश्यकता होगी। यह कार्य लगभग छह से आठ महीने लग सकते है । कार्य शाला व प्रदर्शन अंतिम चार महीने में किये जाएँगे। वीडियो डाक्युमेंटेशन कार्य के अनुरूप साथ साथ चलता रहेगा अंत में पुरे कार्य को एक प्रारूप दिया जाएगा ।

समाप्ति-

अंतिम माह में मास्टर बहुरुपिया कलाकर के सानिध्य में एक कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा जिसमे इस विधा को सिखने की इच्छा रखने वाले रंगकर्मी व अन्य बाल-कलाकर भी इस कार्यशाला का में प्रशिक्षण लेंगे । और कार्य शाला की समाप्ति पर मुख्य कलाकार व प्रशिक्षित कलाकरों द्वरा **शहरों में एवं स्कूलों में** प्रदर्शन किया जाएगा इस प्रकार प्रशिक्षित बहरुपिया कलाकार व मुख्य **बहरुपिया को एक व्यवस्थित व्यावसायिक मंच मिलेगा ।** समाप्त होती इस बहरुपिया कला विधा को स्कूलों में बच्चे देख पाएँगे ।

इस बहुरूपिया कला को प्रदर्शित करते कलाकारों के छायाचित्र

नरेशपालसिंह चौहान

सुजनेश्वर महादेव के पास,
कालिका माता रोड़,
बाँसवाड़ा (राज.)पिन-327001
CELL NO- **08504095542**
npschouhan@gmail.com

बहरूपिया कलाकारों की बहुरूप में रूपांतरित होने की तकनीक एवं प्रकिया (डाक्यूमेंटेशन)

द्वारा- नरेशपालसिंह चौहान

शिव पार्वती (अर्धनारीश्वर)

प्रस्तावना-

भारत मुनि ने अपने नाट्य शास्त्र मे चतुर्विध अभिनय की व्याख्या कराते हुए आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक अभिनय का निरूपण किया है । आहार्य अभिनय अभिनेता को चरित्र के अनुरूप ढलने और केवल दर्शन मात्र से अभिनेता की भूमिका का परिचय देने का काम करता है बहुरूपी कला इसी आहार्य कला का कलात्मक विकास है जिसमे कलाकार अपने वेश ओर सज्जा के मधायम से किसी पात्र के रूप मे अपने आप को परिवर्तित कर लेता है।

बहुरुपिया अर्थात बहुत सारे रूप । एक ही व्यक्ति भिन्न भिन्न रूपों को धारण कर दर्शको का मनोरंजन करता है उसे बहुरुपिया कहा जाता है । यह एक प्रकार का लोक नाटक विधा है । एक ही कलाकार अलग अलग अवसर पर अलग अलग रूप (पात्र) धारण करता है । और प्रत्येक बार वह भिन्न होता है । यह उस अभिनेता का अभिनय कौशल है की दर्शक उसे देख

उस कलाकार को पहचान नहीं पाता है । वह अभिनेता उस रूप में दर्शकों के साथ स्फूर्त- नाट्य का प्रदर्शन कर दर्शकों का मनोरंजन करता है । दर्शक भी इसकी प्रस्तुति का हिस्सा होते है इस मनोरंजन के बदले में दर्शक उस कलाकर को उपहार स्वरूप कुछ रूपया देते है । आज इस विधा के कलाकार लुप्तप्राय हो गए है जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है ।

हमारी वैदिक परंपरा और उस पर आधारित भारतीयदर्शन मे सृष्टि के निर्माण हेतु ब्रह्म का संकलप इसी संकलप के साथ ब्रह्मा ने अपने आपको नाना रूपो मे ढाला और इस संसार को आकार मिला देश के विभिन्न अंचलो मे प्रचलित पारंपरिक बहुरूपी कला के पीछे भी संभवत यह संकल्प ही मूल कारण है।

ब्रह्म के संकल्प के अतिरिक्त एक और आधार बहुरूपी कला को पौराणिक संबल देता है - वह है हमारी अवतरवाद की अवधारणा । हमारे पौराणिक आख्यानों मे ईश्वर के अवतारो की परिकल्पना है । विष्णु के दस अवतार ओरर चौबीस अवतारों का वर्णन ईश्वरीय बहुलता के उदाहरण है । इसी क्रम मे समुन्द्र मंथन एवं अन्य अवसरो पर विष्णु का मोहिनी स्वरूप धरण कर समस्या का निवारण करने का आख्यान हमारे पौराणिक ग्रंथो मे मिलता है

विष्णु के अतिरिक्त भगवान शिव के भी रूप बदलकर अपने भक्तो क परीक्षा लेने अथवा उनका कष्ट निवारण करने की कथा पौराणिक ग्रन्थों के साथ साथ हमरी लोक गाथाओ मे प्रचलित है मुस्लिम परंपरा मे भी रूप बदलने की की काला प्रचलित रही है । हमजनमा नमक पुस्तक मे उमर अय्यार के चरित्र वर्णन है । अय्यार लोग बाज़ीगर और जादू-टोने के

जानकार होने के साथ साथ रूप बदलने मे भी माहिर माने जाते है । आईने-अकबरी मे भी तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का वर्णन कराते हुए बहुरूपी कला का जिक्र मिलता है । ओर इसी

एक सामाजिक प्राणी के रूप मे मनुष्य जीवन के हर लम्हे मे एक अलगा रूप मे अपने आप को पाता है एक ही व्यक्ति अलग अलग समय मे कभी पिता, कभी पुत्र कंही मित्रा , कंही शत्रु ,ग्राहक , दाता,आदि कई रूपो मे सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करता है । यह अलग बात है की वह बार-बार वेश नहीं बदलता है । मनुष्य की इसी सामाजिक प्रवत्ति की कलात्मक अभिव्यक्ति बहुरूपिया कला है

बहरूपिया कला पूरे राजस्थान में प्रचलित है। बहुरूपिए अपना रूप चरित्र के अनुसार बदल लेते हैं और उसी के चरित्र के अनुरूप अभिनय करने में प्रवीण होते हैं । अपने श्रृंगार और वेषभूषा की सहायता से वे प्राय:

वही चरित्र लगने लग जाते हैं, जिसके रूप की नकल वह करते हैं। कई बार तो असल और नकल में भेद भी नहीं कर पाते हैं और लोग चकरा जाते हैं।

मनोरंजक नाट्य कला

बहरूपिया के किसी गाँव में आ जाने पर ये बहुत दिनों तक बालकों, वृद्धों सहित सभी नर-नारियों का मनोरंजन करते हैं। ये प्राय: शादी-ब्याह या मेलों-उत्सव आदि के अवसर पर गाँव में पहुँचते हैं। ये अपनी नकलची कला में अत्यंत ही दक्ष होते हैं। बहुरूपिया कलाकार को राजाओं के दरबार में काफ़ी इज़्जत मिलती थी। ज़्यादातर बहरूपिया कलाकार बड़े मंचो से वंचित रहते हैं. वे फ़ुटपाथ पर अपना मजमा लगाते हैं और लोगों का मनोरंजन करते हैं.।

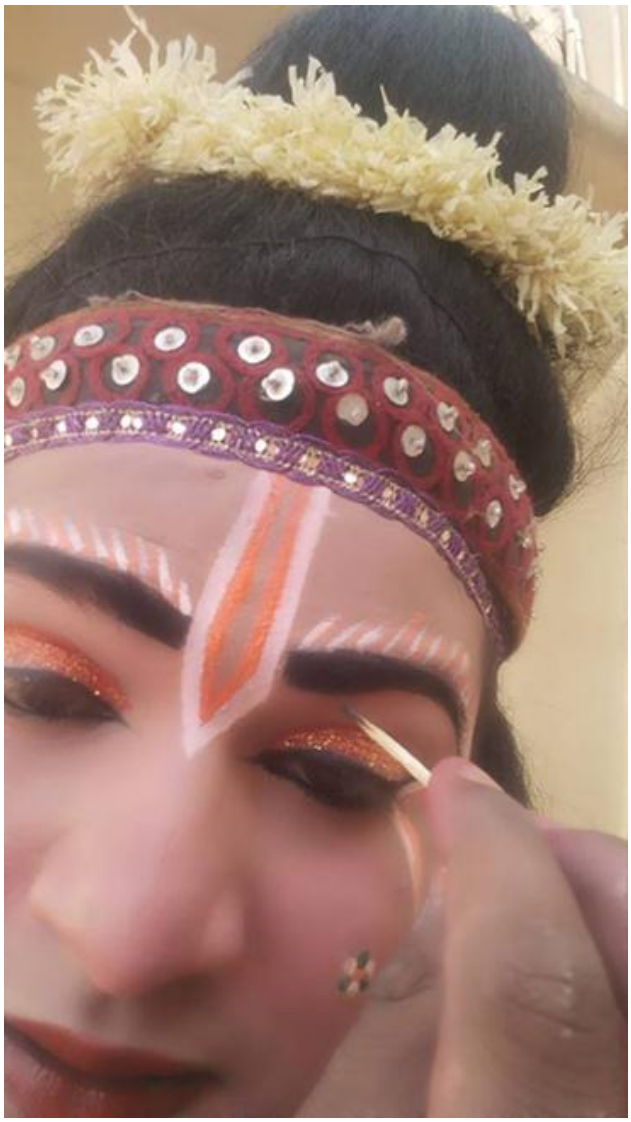

कला रूप मे ढलने की प्रक्रिया अथवा तकनीक

बहुरूपी परंपरा मे एक ही रूप की अनेक बार प्रस्तुति करते हुए कलाकार उस रूप के लिए पूरी तरह से सशक्त होता जाता है मँझजाता है एक कलाकार किसी एक चरित्र का चुनाव करता है

उस चरित्र के अनुसार विभिन्न आहार्य अलकरण एवं वस्त्रो का चुनाव करता है एवं भिन्न साधनो का उपयोग कर के प्रयोग करता हुआ उस पात्र मे बिशेश्ज्ञ हो जाता है

बार बार (एक ही चरित्र की पुनरावृत्ति होने से-) वही शरीरी क्रिया के कारण शरीर एक विशेष अभ्यास प्रक्रिया खोज लेता है ओर प्रदर्शन के अवसर पर स्वस्फूर्त व्यवहार की समस्या का समाधान प्रस्तुत करने की मनोवैज्ञानिक कोशिश करता है । मनोवैज्ञानिक अनुभव और उनकी शारीरिक अभिव्यक्ति के बीच अटूट रिश्ता है. मनुष्य की आत्मा और शरीर के तत्व अविभाज्य हैं. शारीरिक प्रदर्शन से आंतरिक अनुभव संभव हो जाता है , अनुभवों के आदान-प्रदान में हमारा शरीर ही माध्यम बनाता है. जिससे

प्रदर्शन दर प्रदर्शन कलाकार सशक्त होता जाता है परमपरा मे पीढ़ी दर पीढ़ी देखता हुआ अभ्यास जीवन का अंग हो जाता है सभी पारंपरिक कला रूपो मे ऐसा ही होता है।

जिस चरित्र का चुनाव किया है उस चरित्र रूप के निमित्त बाहरी आवरण के साधनो का संकलन कर चरित्र निर्मिति की ओर बढ़ता है चेहरे को बदलने हेतु चित्रांकन व रंग रोगन (मेक-अप)की प्रक्रिया होती है फिर वस्त्र ओर अलक्ड्करण साधनो का प्रयोग होता है साथ साथ वस्त्रो को पात्र रूप की आवश्यकता अनुसार कलाकार शरीर पर आरोपित करता है पूर्ण रूप से शुशोभित हो कर प्रदर्शन के लिए गली मुहल्लों व चौराहो की पर पाहुचता है अपने दर्शक को देख कर पात्र अनुरूप अभ्यास गत संववाद संप्रेषित करता है एवं स्वस्फुर्त नाट्य का प्रदर्शन कर जनता को सम्मोहित कर उनक मनोरंजन करता है दर्शक उसकी प्रस्तुति से प्रसन्न हो कर कलाकार को भेट प्रदान करता है कभी कभी एक से अधिक कलाकार समूहिक प्रदर्शन कर आपसी संवाद भी कर मनोरंजक आशु नाट्य प्रदर्शन कराते है ।

कलाकार के साधन (अलंकरण एवं वेश विन्यास)

बहुरूपी पामपरा मे रूप धरना ओर स्वांग धरना महत्वपूर्ण है जो कलाकार इन तीनों विधाओ मे महारत हासिल कर लेता है वही सफल बहरूपिया बन सकता है पत्र के अनुरूप अपने चेहरे और शरीर पर विविध सामाग्री का उपयोग कर रूप सज्जा करना रूप धरना की प्रक्रिया कहलाती है वही पत्र के अनूषर वस्त्रो का चयन ,उनके रंगो का निर्धारण सूती अथवा रेशमी कपड़ो का चयन ओर उयांकी सिलाई वेश धरना की प्रक्रिया है । स्वांग धरना की प्रक्रिया मे पत्र के अनुरूप हाव-भाव संवाद और चाल ढाल सुनिश्चित करना है इन तीनों प्रक्रियाओ को समग्र रूप मे मोहिनी विद्वाभी कहा जाता है।

बहरूपीयों मे पारंपरिक रूप से प्रकृति सामाग्रीरूप धरनेहेतु काम मे ली जाती है जिसमे मे से कुछ प्रमुखा है ; मुर्दा सिंगी ,गेरू ,सोना गेरू, हिंगलू कोहल , घिया पत्थर, मुलतानी मिट्टी, चंद्दाँ , पेवड़ी, गुलाल,बेसन हल्दी, दूध गुलाब जल रोली के साथ साथ पलाश जैसे फूलोंसे निकालने वाले रंग ।

बालो, दाढ़ी और मुछ बनाने के लिए ऊन , बकरी, ऊंट और मनुष्योंके बाल कम मे लिए जाते थे । पात्र के अनुरूप इन साधनो से बाल दाढ़ी और मूच को आकार दिया जाता था । इन्हे चिपकाने के लिए बाद के पेड़ का दूध काम मे लिया जाता था।

बदलते युग मे रूप सज्जा व मेक अप के लिए कई साधन उपलब्ध है । का कपनीय मेकअप क लिए सांगर बानती है ओर दादी मूछके लिय सिंथेटीक साधन उपब्ध है किन्तु आज भी बहरूपिया कलाकार कुछ रूपो के लिए पारंपरिक सामग्री ही काम मे लेते है ।

गुजरात मे चेहरा रंगने के लिए बनाया जाने वाला लोशन एक धार्मिक कर्म कांड का हिस्सा होता है । गुजराती बहुरूइए इस प्रक्रिया को जल अभिषेक कहते है शिव लिंग पर जल चढाते हुए सोना गेरू का मिश्रण किया जाता है । इससे तैयार लेप मे आवश्यकता अनुसार मुलतानी मिट्टी ,चन्दन एवं सिंदूर मिलाया जाता है वेश विन्यास ओर रूप सज्जा के साथ साथ पत्र की आवश्यकता को देखते हुए सहायक सामाग्री भी कम मे ली जाती है जिसे राजा आदि के चरित्र बनाने पर वेश बूशा के अलावा तलवार डीएचएल किस्तमल बी जरूरीही है। इसके साथ साथ कुछ पात्रो का वेश धरणे के लिए कठपुतली का भी उपयोग किया जाता है लकड़ी ओर पेपेयर मेषी की सहायता से पुतले ओर नकली हाथ पैर, मुखौटे आदि बनाए जाते है ।

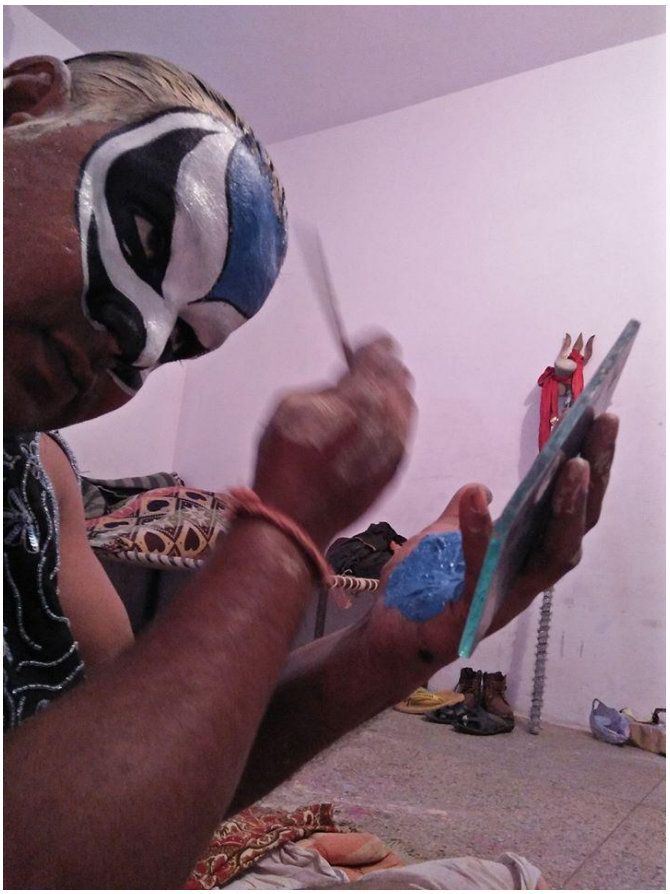

कलाकार की वाणी

महबूब (महमूद)

गाँव- भाभरू, जिला दौसा (राज।)

बहुरूपिया महबूब भाई के अनुसार बहुरूपी कलाकार चरित्र का चुनाव किसी सीरियल से, फिल्म से या किसी गाव के विशेष व्यक्ति से रूप चुरा लेते है । कुछ जातिगत जैसे गड़िया लूहर , गुज्जर , बनिये ऐतिहासिक पात्र आदि से भाव चुरा लेते है जातिगत संस्कृति के सहारे इन चरित्रों की विशेषता को बना लेता है

अब गाड़ियो लोहार है तो उनकी मार्केटिंग कैसे करे तो वो एक तरह का माहौल बनाते है जिससे उसका समान बिक जाता है । कई बार सब्जी मंडी मे सब्जी बेच दे ते है । पहले की काला मे वास्तविक रोल कने पड़ते थे। रजवाड़ो मे लंबरदारों मे के समाय मे हम रियल रोल करते थे जिसमे सीएचएच महिनी टक्क लग जाते थे ... कभी कभी सालो लग जाते थे बालों को बढ़ालेटे थे ....हम दुकान के ऊपर बाइद्थे ह अः तब उस दुकानदार की बोलने व बेचने के तरीके को सीखा लेता है ,,,, मतलब नकल कर लेते है।

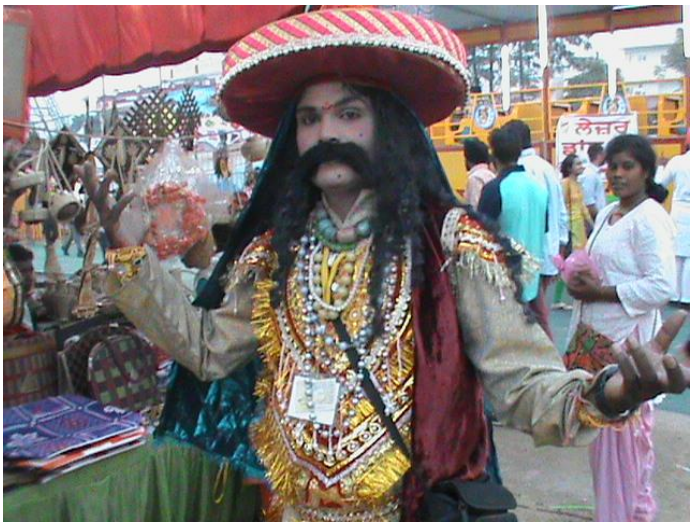

दिलीप भाई अहमदाबाद(गुजरात) - बताते है की हम जाति और पेशे से बहरूपिये है और हमारे पूर्वजों ने इस काला से रोजी रोटी कमाने के साथ नाम और प्रसिद्धि भी कमाई। जूनागढ़ राज घराने और दरबार (राजा)के प्रश्रय मे यह कला फली फुली तथा उनके जजमान कलाकारों के दैनिक आवशयकताओं को पूरा करते थे। विशेष अवसरों पर हमें इनाम, उपहार आदि देते थे। दिलीप भाई पारंपरिक रूपों के साथसाथ डाक्टर, चार्ली, चैपलिन, माइकल जैक्सन जैसे नए जमाने के रूप भी धरते है ।

दिलीप भाई अहमदाबाद (जिन्न के रुप में)

जानकी लाल भांड - फकीर रूप

सुबरती बहुरूपिया बंदीकुई जयपुर राजस्थान के अनुसार राजस्थान मे करीब 15 हजार बहरूपिये हिन्दू और मुस्लिम संप्रदाय मे विदद्यमान है। हमारे पूर्वजो को राज घरानो का प्रश्रयमिला । मेरे छह बेटे इसी काला को सीख ,रहे है उन्हे दुख है की ज्या लिख पढ़ नहीं पाने की वजह से दुनिया की दौड़ मे पीछे रह जाते है। पढेलिखे होने कुशलता से अपनी कला को और विकसित कर सकते थे ।

सुबराती बहरूपिया बांदीकुई जयपुर (राज)

सिकंदर अब्बास हलोल गुजरात के सिकंदर अब्बास ने इस परंपरा को अपने पिता से सीखा । तीन वर्ष की उम्र से इस विधा से जुड़ चुके थे । तीन साल की उम्र मे कृष्ण के रूप मंच पर पहली प्रस्तुति दी पिता ने वासुदेव का रूप लिया । सिकंदर के पिता को पूर्वजों से मिली इस परंपर से अधिक प्रेम था । पूर्वजो ने अवध से आकार दिल्ली मे अपना मुकाम बना लिया था वे गुम्मक्कड़ अभनेता थे दिल्ली मे मुगलो के शासन मे उनके पूर्वजो को प्रश्रय मिला मुगल शासकों और आँय स्समंतों के मनोरसञ्जन के शठ साथ पदौसी राज्यो मे आवश्यक होने पर जासूसी का कम भी बड़ी कुशलता से करते थे इसलिए राजा भी प्रसन्न रहते थे। हमारे लोग अचे मेक-अप आर्टिस्ट,लेखक ओर प्रतिभावन अभिनेता थे। समाज मे वे बहुत सम्मानित थे।

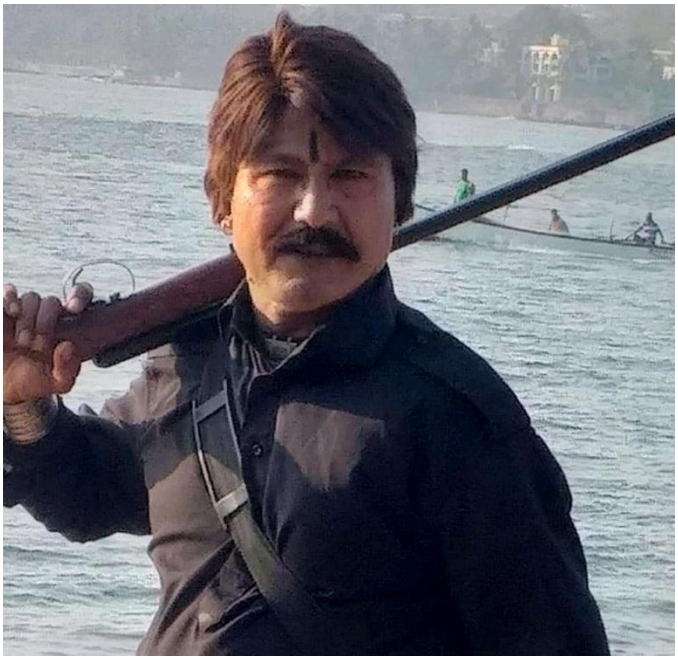

सिकंदर अब्बास, हलोल (गुजरात)

बंशी लाल, अहमदाबाद (गुजरात)
(सरदार पटेल के रुप में)

बंशी भाई अहमदाबाद (गुजरात) - हमारे पुरखे परंपरा से 52 रूप धारा करते थे जो पौराणिक चरित्रों के साथ साथ आम जीवन के रूप भी है जैसे - लुहारण , दूधवाली, मलिन आदि। पुराने समय मे बहुरूपिया कलाकार गाँव गाँव घूमकर अपने रूपो के माध्यम से जनता का मनोरंजन करते थे साथ ही सामाजिक और राजनैतिक विशमताओ पर व्यंग करते हुए लोगो की तारीफ पाते थे। हमारी सामाजिक व्यवस्था मे इस कला मे महिलाओं का कलाकार के रूप मे प्रवेश निषेध रहा है।

जानकीलाल भांड भीलवाड़ा (राज)

मैं बचपन से इस कला के साथ जुड़ा हु । यह हमारा खानदानी काम है मेरे पिताजी भी यही काम करते थे । उनका नाम श्रीहजारी लाल भांड था । हम दोनों बाप-बेटा मिलकर यह काम करते थे । मे बारह वर्ष का था पिताजी भिन्न रूप बनाते थे मे देखता था और वे मुझे इसकी बारीकियाँ सीखते सब तरह के रूप ,आदिवासी , गादुलिया लौहार , ईरानी चसमे वाली , दूध वाली । शिव पार्वती , नरदा , पठानी ,सौदागर आदि ...मई उनको देख कर ही सीखा । महारणा मेवाड़ के हम दरबारी भंड है । हमारे पूर्वजो को दरबार ने भरण पौषण के लिए जागीरी दान की हुई है । जब शादी-ब्याह होते तो दरबार के समय हम भांड के लिए एक रुपया तय किया गया था । भांड कला मे जो बचपन से सीखा वो सीख जाता है या ह भी रुचि का काम है यदि किसी जबर्दस्ती ये काम कराया जय तो वो इसे नहीं कर सकता । आज के डीनो मे नई पीढ़ी यह काम मे रुचि नहीं लेती है ऐन अठट्टर वर्ष का हूँ । मेरे बाद मेरे घर मे ये कला करने वाला कोई नहीं है ।मैं आज भी सक्रिय हूँ दीपावली होली ,त्यौहार आदि पर मे ये कला का र प्रदर्शन अपने यजमान के सामने प्रदर्शित करता हूँ, ओर इसी से मेरा रोजगार चलता है ।

जानकीलाल भांड
(पठान के रूप में)

जानकी लाल भाड़ (गाडुलिया लौहारन के रूप में)

मकसूद खान बहुरूपिया जयसिंहपूरा शाहपुरा जयपुर (राज)

इसी कला का अभ्यास मैं बचपन से है कर रहा हूँ मेरे पिताजी भी ये काम करते थे मेरे दो भाई भी ये करते है ।मर पिता जी का नाम नूरदीन है प्यार ये लोग उन्हे हीरा लाल कहते है क्योकि जवानी मे वो होरो के जैसे दिखाई देते थे। उन्ही से हमने भी सीखा है शाहपुरा महाराजा के दरबार मे हम पूर्वज कला दिखते थे ।दिवाली के समय हम आज भी ग्गंव मे रूप बनाकर निकलते है मेरे भाई महबूब ओर सलीम भी ये काम करते है।

मकसूद भाई, श्यामपुरा, शाहपुरा, जयपुर (राज) शहंशाह अकबर के रूप में

बहरूपिया कला के प्रचलित पात्र - पौराणिक चरित्रों मे देवी - देवताओं, इतिहास पुरुषों व महापुरुषों, अर्धनारीश्वर, राधा-कृशन, नारद का रूप धारण करने के अलावा ये गाँव के धनी-मानी लोगों की भी नकल करते हैं। गाँव के बोहरा, सेठजी, बनिया आदि भी इनके मुख्य पात्र होते हैं। पौराणिक ग्रंथों में भी इस कला के प्रचलित होने के प्रमाण मिलते हैं। हिन्दू राजाओं तथा मुग़ल बादशाह ने भी इस कला को उचित प्रश्रय दिया था।

शिवनटराज-अकरम बहुरूपिया

मीरा-जनकीलाल भांड

कृष्ण- मोहनलाल बहुरूपिया

अकबर-बीरबल- महबूब-मकसूद बहरूपिया

सिकंदर अब्बास, (हलोल गुजरात) मराठा रूप

सलीम भाई बहरूपिया बांदीकुई जयपुर (देवी काली रूप)

फिरोज बहरूपिया बंदीकुई, जयपुर (जिन्न रूप)

हनुमान - गणेश (जानकी लाल भांड)

भोलेनाथ रूप - जानकी लाल भांड

टीपू सुल्तान - गुलजार अहमद बांदीकुई जयपुर

सिल्वर मेन, भोलेनाथ,जोकर - नौशाद, सागर खान,सलीम बदीकुई जयपुर

देवी रूप - सलीम बांदीकुई

ग्वाला , साधू ,राजा - जानकी लाल भांड

महात्मा गांधी - सिकंदर अब्बास

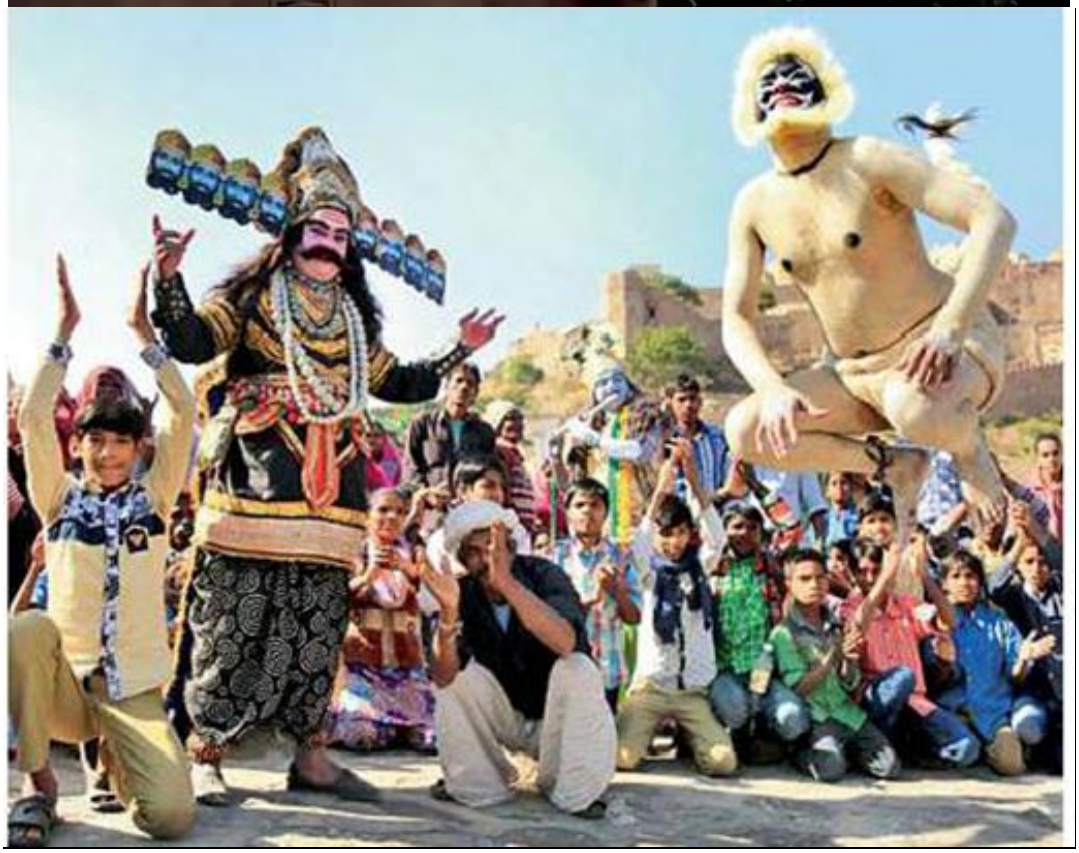

रावण - बंदर रूप

कौन कौन से कलाकार

बहरुपिया कलाकारों के नाम इस प्रकार है, जो इस कला विधा का प्रदर्शन कर इस विधा को जीवित रकने में सक्रिय योगदान दे रहे है।

Mehbub, Bhaharu
Rajasthan

Sikandar Abbas
Halol (Guj)

Maksud bhai
syampura jaipur

Dilip bhai
Ahemedabad(Guj.)

Sagar khan
Bandikui Jaipur

Akarm khan
Bandikui Jaipur

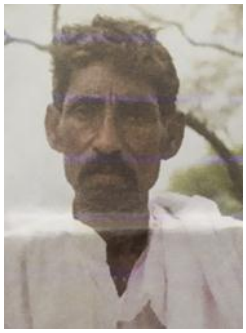

Raghuveer
Jaipur

siraj bharupiya
Sanwad

Raju bahrupiya
Manpura Jaipur

Swaraj bahrupiya
Bandikui Jaipur

Rahulbahrupya
Bhaharu

Shamshaad subrati
Bandikui Jaipur

Suraj bahrupiya
Alwar

Guljar Ahmad
Bandikui Jaipur

Ankush bahrupiya
Alwar

Kailash bahrupiya
BadNagar

Subrati bahrupiya
Bandikui Jaipur

Feeroz Bahupiya
Bandikui Jaipur

Anil Bahrupiya
Bandikui Jaipur

Shamshad
Bandikui Jaipur

Janaki lal Bhand
Bhilwara (Raj)

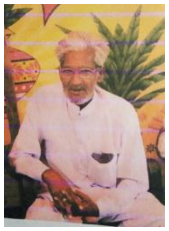

Ghuda Mohan
Jaipur

Farid khan
Bandikui Jaipur

Banshi lal
Ahemdabad

Bhart Bhai
Ahemdabad

BAHRUPIYA ARTIST

1. **Mehbub,**
2. **Sikandar Abbas**
3. **Maksud bhai**
4. **Dilip bhai**
5. **Janaki lal Bhand**
6. **Ghuda Mohan**
7. **Farid khan**
8. **Banshi lal**
9. **Bhart Bhai**
10. **Janakilal Bhand**
11. **Ghuda Mohan**
12. **Suraj bahrupiya**
13. **Guljar Ahmad**
14. **Ankush bahrupiya**
15. **Kailash bahrupiya**
16. **Raju bahrupiya**
17. **Swaraj bahrupiya**
18. **Rahulbahrupya**
19. **Shamshaadsubrati**
20. **Sagar khan**
21. **Akarm khan**
22. **Raghuveer**
23. **siraj bharupiya**
24. **Salim Bahrupiya**

नरेशपालसिंह चौहान
सुजनेश्वर महादेव के पास,
कालिका माता रोड़,
बाँसवाड़ा (राज.)पिन-327001
CELL NO- 08504095542
npschouhan@gmail.com

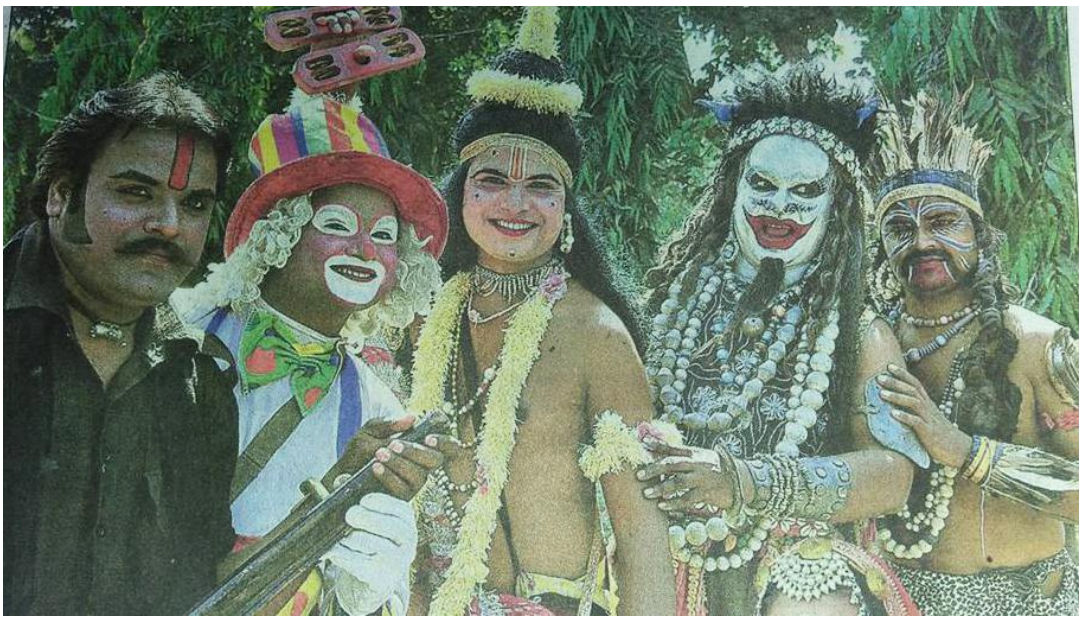

भिन्न भिन्न रूप

अकबर बादशाह - सुबराती बहुरूपिया

लोग- लुगाई रूप

बहरूपिया कलाकारों को चिन्हित करना व बहुरूप में रूपांतरित होने की तकनीक एवं प्रकिया पर कार्यशाला का आयोजन एवं डाक्यूमेंटेशन ।

बहुरुपिया यह शब्द बहु + रुप से बना है । अर्थात बहुत सारे रूप । एक ही व्यक्ति भिन्न भिन्न रूपों को धारण कर दर्शको का मनोरंजन करता है उसे बहुरुपिया कहा जाता है । यह एक प्रकार का लोक नाटक विधा है । एक ही कलाकार अलग अलग अवसर पर अलग अलग रूप (पात्र) धारण करता है । और प्रत्येक बार वह भिन्न होता है । यह उस अभिनेता का अभिनय कौशल है की दर्शक उसे देख उस कलाकार को पहचान नहीं पाता है । वह अभिनेता उस रूप में दर्शकों के साथ स्फूर्त- नाट्य का प्रदर्शन कर दर्शकों का मनोरंजन करता है । दर्शक भी इसकी प्रस्तुति का हिस्सा होते है इस मनोरंजन के बदले में दर्शक उस कलाकर को उपहार स्वरूप कुछ रूपया देते है । आज इस विधा के कलाकार लुप्तप्राय हो गए है जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है ।

उद्धेश्य-

इस लुप्त प्राय हो चुकी कला विधा के वर्तमान को कलाकार चिन्हित कर इस कला को पुनःजीवित करने के प्रयास में एक पहल करना, इन कलाकारों को संगृहीत कर इनके प्रदर्शनों के द्वारा नई पीढ़ी के लोगों तक इस कला रूप को पहुचने का प्रयास मात्र ।

<u>पहली रिपोर्ट-</u>

दिनांक- 25 सितम्बर 2014.

इस उद्धेश्य से इस विधा के कलाकारों की खोज प्रारम्भ की गई । इस कला विधा के कलाकार याने बहुरुपिया प्राय घुमंतू होते है । एक शहर से दूसरे शहर में जाकर प्रदर्शन करते है । अतः इन्हें खोजना थोडा कठिन अवश्य हो जाता है । मुझे भी शुरुआत में कठिनाई हुई लेकिन एक दिन मैं बाँसवाड़ा शहर में बाजार के लिए निकला,तो वहां देखा की एक रंग बिरंगे कपड़ो व पीले

हरे रंग से पुते हुए चहरे का एक बहुरूपिया कलाकार दुकानों के सामने घूम घूमकर पैसे मांग रहा है मेरे लिए बड़ा खुशी का पल रहा । क्योंकि संभवतः मेरे लिए ये नजारा कई सालो बाद पुनः जीवित हुआ था । मैंने बचपन में कभी ऐसा देखा था । मेरी उत्सुकता हुई की उअसे बात करू मेने अपनी गाड़ी उसके पास खड़ी की और उसने मेरी पीठ पर हाथ रख कर उगाही की, मैं कुछ बोलता उसके पहले ही उसने पीठ थपथपाई और हाथो से पैसे का इशारा किया । मैं उससे पूछने लगा की ये कोनसा रूप है, उसने कहा नरसिंह अवतार और फिर पैसे का इशारा किया । मैंने कहा ये काम कब से कार रहे हो और वो चलता बना । मैंने जल्द बाजी में उसे दस रूपये दिए और वो फिर चला गया । मैंने उससे कहा मैं तुम्हारे साथ इस कला के विषय में बात करन चाहता हूँ उसने समझा में उसके समय की बर्बादी कर रहा हूँ । में भी उसके पीछे गया एक जगह जब वो रुका मैंने कहा भाई दस मिनट बैठ कर मेरे साथ चाय पीते पीते बात कर लो ,वो बड़ी मुश्किल से वो मेरे साथ आया । मैंने उसे अपने व प्रोजेक्ट के बारे में बात की पर उसे इस सब से कोई खास मतलब नहीं लगा । वो जब तक मेरे पास बैठा यही बात पूछने लगा मुझे क्या मिलेगा ,कुछ मिलेगा या नहीं बड़ी मुश्किल से वो बात करने को तैयार हुआ उसके अनुसार वो जाती से वागरी है उनका मूल काम झाड़ू बनाना है । लेकिन दस साल से पेट के लिए बहरुपिए का काम करता है । मेलो और त्योहारों पर यही रूप बनाकर पैसे मांगता है । वो चित्तोडगढ के एक छोटे गावं में रहता है उसका नाम मोहनलाल वागरी है 1963 में उसका जन्म हुआ और पिछले दस साल ये ये रूप धरकर पैसे मांगता है पुरे दिन में 100-500 रूपये कमा लेता है ।

दरअसल **मोहनलाल** असली बहरुपिया नहीं है । ये उन लोगोंमे से जो अपने पेटपूजा के लिए एक आसान काम.....कपडे पहन कर, रंग लगाकर , रूप बनाकर घूमते है तो कुछ पैसे मिल जाते है बस । लेकिन राजस्थान में बहरुपिया कला का प्रदर्शन करने वाले पारम्परिक परिवार है, जो पीढियों से यही काम करते है.....।

मैंने राजस्थान में अपने संपर्को और सांस्कृतिक संस्थओं, रंगकर्मियों से पूछताछ की व खोज की, जिससे इस विधा के कुछ कलाकरों का नाम पाता चला जो अब भी ये काम करते है । ये उनका

पारीवारिक धंदा है, राजा-महाराजा के समय दरबार में उनक पूर्वज यही काम करते थे । और मनोरंजन करते थे । 2-3 लोगों से फोन पर संपर्क हुआ है ।

जयपुर के नजदीक बांदीकुई में एक बहरुपिया परिवार के मुखिया से संपर्क हुआ है । **शुभ्राती-शिवराज** उसके अनुसार उसका जन्म शिवरात्रि को होने से वो शिवराज या शुभरात्री के नाम से मशहूर हुए है । उनका यही पुश्तैनी धंदा है जयपुर राज दरबार में उनके पूर्वज यह हुनर दिखाते थे । पीढ़ी दर पीढ़ी यही उनका काम रहा है उनकी उम्र 50 के करीब है तीन भाई जालमा,बाबु स्वंय शुभात्री यही काम करते है । जालमा की म्रत्यु हो गई , जालम के तीन बेटो में एक बेटा अभी इस काम में सक्रीय है । शुभ्राती का पूरा परिवार इस कला को समर्पित है। उनके छह लडके है, सभी यही काम करते है। उनको राजस्थान में होने वाले मेलो में सरकारी संस्थाओँ द्वारा बुलाया जाता है । कुछ संस्थओं ने उन्हें इस काम के लिए सममिनत भी किया है । उनका कुछ और बहरुपिया परिवार से सम्बन्ध है । जब में उनसे मिलुगा तब और कलाकरों की जानकारी मिलेगी ।

बाँसवाड़ा में एक **ढोली** जाती का परिवार है । इस जाती को गाने-बजाने के कारण ढोली कहा जाता है । यह उनका पारम्परिक काम है । इस परिवार को बाँसवाड़ा के महाराज ने मेवाड़ से लाकर बाँसवाड़ा रियासत में बसाया था । और चालीस बीघा की जागीरदारी भी दि थी। उस परिवार के **स्व. गनपत लाल** यह काम (बहरुपिया) किया करते थे । बचपन में एक बार उनको मैंने शिवरात्रि के मेले शिव-पार्वती रूप का प्रदर्शन करते देखा था । मेरा यह एक ही अनुभव है, ये किस स्तर के बहरुपिया थे, इसके लिए बाँसवाड़ा के लोगों से मैं जानकारी जुटा रहा हूँ । आजकल इस परिवार के लोग अब ये सब नहीं करते है, परिवार भी बिखर सा गया है। आजीविका के लिए सब नौकरी-धंदा करते है । उनके परिवार के पास स्व.गनपत की कोई फोटो भी नहीं है।

गुजरात के पंचमहल में रहने वाले **स्किंदर बहरुपिया** से फोन पर बात हुई। बातचीत के अनुसार मूलतः वो राजस्थान से लेंकिन 1947 के बाद से उनका और कुछ और और परिवार का गुजरात में पलायन हुआ उनके अनुसार बहरुपिया में भी आलग भेद है, भांडका व बहरूपिया । बहरुपिया शुद्ध रूप है व भांडका केवल नकल करते है। यदी कोई अन्य ये शिक्षा लेता है तो गुरु शिष्य पारंपरा के अनुसार शिष्य के हाथ में मौली (धागा) बांध कार शिक्षा प्रारम्भ होती है। अब्बास के अनुसार बहरुपिया राजाओ के खास हुआ करते थे । रानी को सौंदर्य प्रसाधन बहरुपिया परिवार उपलब्ध करवाता था बहरुपिया एक राज्य से दूसरे राज्य में जासूसी कर अपने राजा को

जानकारी देता था। राज परिवार के बच्चों को अदब-कायदा बहरुपिया और तवायफों द्वारा सिखाई जाती थी। **सिकंदर** पूरी तरह से इसी कला विधा को समर्पित है ।

कुछ बहरुपिया कलाकारों के नाम इस प्रकार है जिनके बारे में मुझे सूचना प्राप्त हुई है

1. सिकंदर अब्बास ,पंचमहल,गौधरा ,गुजरात
2. संजीव बहरुपिया,सवाईमाधोपुर.(राज.)
3. जानकी लाल भांड भीलवाड़ा(राज.)
4. शुभरात्री-शिवराज,बांदीकुई.जयपुर (राज.)
5. अनिलकुमार ,कानोड,उदयपुर (राज)
6. स्व.गनपतलाल, बांसवाड़ा(राज.)
7. स्व.जालमा,बांदीकुई,जयपुर
8. कैलाश जालम , बांदीकुई,जयपुर
9. चंदू जालमा बांदीकुई,जयपुर
10 बाबु खान बांदीकुई,जयपुर
11 फिरोजशुभ्रती बांदीकुई,जयपुर
12. फरीद बांदीकुई,जयपुर
13. नौशाद बांदीकुई,जयपुर
14. शमशाद बांदीकुई,जयपुर
15. सलीम बांदीकुई,जयपुर
16. अकरम बांदीकुई,जयपुर
17. स्व.हुसैन भाई, गोधारा(गुजरात)
18. महमूद अब्बास पंचमहल, गुजरात
19. सरफराज,गुजरात
20. मुंशी /गुलाब खान, गुजरात
21 .शब्बीर, गुलाब खान गुजरात
22. राजू/बशीर भाई ,अहमदाबाद(गुजरात)
23. अशफाक /बशीर भाई,अहमदाबाद(गुजरात)
24. मोहन लाल वागरिया, उदयपुर(राज.)।
25. स्व.शौकत भाई,गुजरात.

इन बहरुपिया कलाकारों से मिलने पर और भी अन्य कलाकरों की जानकारी मिलने की उम्मीद है । क्योंकि राजस्थान में रियासतकाल में बहुरुपिया कलाकारों के परिवार को संरक्षण दिया जाता था । ऐसे कई परिवार है जो गुजरात ,मध्यप्रदेश में पलायन कर चुके है । जिन्हें रहने व खाने के लिए जमींन देकर राजाओं ने अपनी रियासत में बसाया । इस विधा के कलाकारों की खोज खासकर दक्षिणी राजस्थान उदयपुर संभाग, जयपुर संभाग एवं दक्षिणी राजस्थान के सीमावर्ती गुजरात के जिलों दाहोद, अहमदाबाद, हिम्मतनगर क्षेत्र में की खोज की जाएगी ।

कुछ बहरुपिया कलाकारों के नाम पते के अनुसार में उनसे मिलने गया लेकिन तीज त्यौहार में ये लोग काम धंदे के लिए शहर शहर जाते है जिससे इनसे मिलना नहीं हो पाया,लेकिन मैंने उनके गाव व मेरे जानकारों को उनसे संपर्क करने को कहा है एक दो कलाकारों से फोन पर भी संपर्क हुआ । उनसे बातचीत इस विषय में बात हुई है, जल्द ही में उनसे मिलाने वाला हूँ । और दूसरे कलाकारों से भी मिलाने की बात की है । मुझ से ज्यादा उन कलाकरों की मुझसे उम्मीद है की कुछ मिल जाएगा .....।
बहरुपिया कलाकारों से व्यक्तिगत मिलकर अकादमी के द्वारा दिए गए प्रारूप के अनुसार बातचीत कर फॉर्म भर कर भेजा जाएगा ।

नरेशपालसिंह चौहान
सुजनेश्वर महादेव के पास,
कालिका माता रोड़,
बाँसवाड़ा (राज.)पिन-327001
CELL NO- 08504095542
npschouhan@gmail.com